



Hargharpanditji

॥ पापमोचनी एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ पापमोचनी एकादशी व्रत कथा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

पापमोचनी एकादशी की कथा

पद्म पुराण के अनुसार, एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—"हे जनार्दन! चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी का क्या नाम है? उसका व्रत कैसे किया जाता है और उसका क्या फल प्राप्त होता है?"

तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

हे राजन्! यह एकादशी पापमोचनी एकादशी कहलाती है। इसका व्रत मनुष्य के समस्त पापों का नाश करने वाला तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है। इसकी महिमा प्राचीन काल में महर्षि लोमश ने राजा मान्धाता को सुनाई थी।

प्राचीन समय में चैत्ररथ नामक एक अत्यंत सुंदर वन था। वहाँ देवता, गंधर्व, किन्नर और अप्सराएँ विहार करती थीं। उसी वन में मेधावी ऋषि नाम के एक महान तपस्वी मुनि कठोर तपस्या कर रहे थे। उनका तप इतना प्रभावशाली था कि देवराज इन्द्र भी उसका सम्मान करते थे। उसी समय स्वर्ग की अत्यंत रूपवती अप्सरा मंजुघोषा वहाँ आई। कामदेव ने उसे आदेश दिया कि वह किसी प्रकार मेधावी ऋषि की तपस्या भंग करे। मंजुघोषा ने मधुर स्वर में वीणा बजाई, मनोहर गीत गाए और अपने रूप-सौंदर्य से ऋषि का मन आकर्षित किया।

धीरे-धीरे मेधावी ऋषि का मन तप से हट गया और वे मंजुघोषा के साथ रहने लगे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि केवल एक रात्रि बीती है, जबकि वास्तव में सत्तावन (57) वर्ष बीत चुके थे।

एक दिन मंजुघोषा ने ऋषि से स्वर्ग लौटने की अनुमति माँगी। तब मेधावी ऋषि को अपनी तपस्या भंग होने का ज्ञान हुआ। उन्हें अत्यंत दुःख और क्रोध आया। क्रोधित होकर उन्होंने मंजुघोषा को शाप दिया—

"हे पापिनी! तू पिशाचिनी बन जा।"

शाप सुनकर मंजुघोषा अत्यंत भयभीत हो गई। उसने हाथ जोड़कर ऋषि से क्षमा माँगी और शाप से मुक्ति का उपाय पूछा।

ऋषि का क्रोध शांत हुआ। उन्होंने कहा—

"चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पापमोचनी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करने से तुम इस शाप से मुक्त हो जाओगी।"

मंजुघोषा ने विधिपूर्वक पापमोचनी एकादशी का व्रत किया। भगवान श्रीविष्णु की कृपा से वह पिशाचिनी योनि से मुक्त होकर पुनः अपने दिव्य अप्सरा स्वरूप को प्राप्त कर स्वर्गलोक चली गई।

उधर मेधावी ऋषि भी अपने पिता महर्षि च्यवन के आश्रम पहुँचे। उन्होंने अपनी भूल बताई। महर्षि च्यवन ने उन्हें भी पापमोचनी एकादशी का व्रत करने की सलाह दी। मेधावी ऋषि ने श्रद्धापूर्वक व्रत किया और अपने तप के तेज को पुनः प्राप्त कर सभी पापों से मुक्त हो गए।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो मनुष्य श्रद्धा, नियम और भक्ति के साथ पापमोचनी एकादशी का व्रत करता है, उसके बड़े से बड़े पाप भी नष्ट हो जाते हैं। उसे भगवान श्रीविष्णु की कृपा प्राप्त होती है, मन शुद्ध होता है और अंत में मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।"

पापमोचनी एकादशी का संदेश

पापमोचनी एकादशी की कथा हमें सिखाती है कि काम, क्रोध, मोह और विषय-विकार मनुष्य की तपस्या, ज्ञान और विवेक को भी विचलित कर सकते हैं।

किंतु सच्चा पश्चात्ताप, भगवान श्रीविष्णु की भक्ति और श्रद्धापूर्वक किया गया एकादशी व्रत मनुष्य को पुनः धर्ममार्ग पर स्थापित कर देता है। इसलिए इस एकादशी को पापों का नाश करने वाली और आत्मशुद्धि प्रदान करने वाली महान तिथि माना गया है।

॥ श्री पापमोचनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

